जिंदगी की लहर

(शाश्वत प्रेम की एक कहानी)

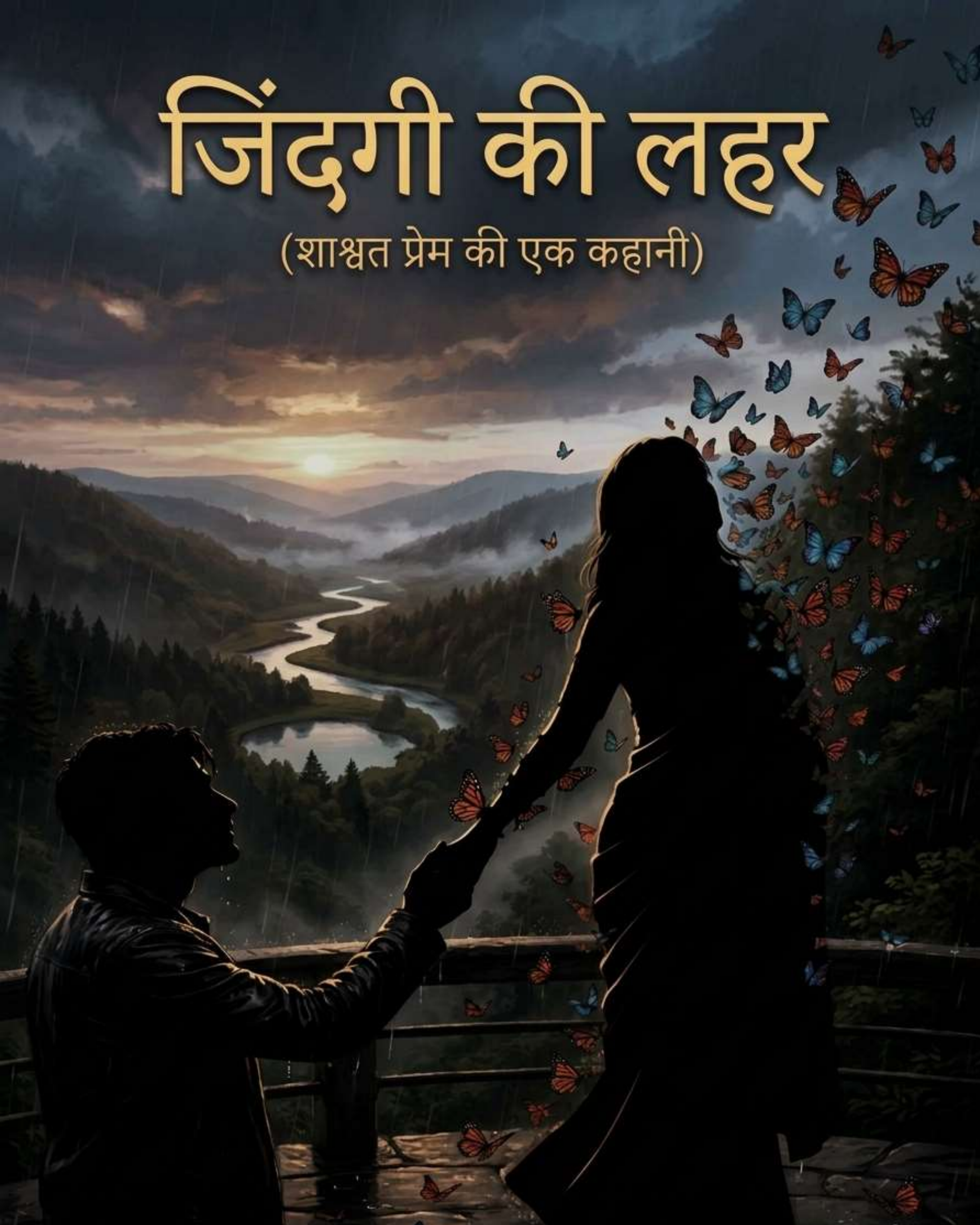

प्रस्तावना

"प्रेम" - एक ऐसा शब्द जिसे दुनिया की हर भाषा में अलग तरीके से लिखा जाता है, लेकिन इसकी भाषा एक ही है, और वो है भावनाओं की भाषा। 'जिंदगी की लहर' सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि उन जज्बातों का एक सफर है, जिनसे हम सभी कभी न कभी गुजरते हैं।

जब मैंने इस कहानी को लिखना शुरू किया, तो मेरे जहन में बस एक ही ख्याल था कि क्या प्यार वाकई वक्त की हर कसौटी पर खरा उतर सकता है? क्या जिंदगी की लहरें हमें अपनों से दूर ले जाती हैं या फिर अंत में उसी किनारे पर वापस ले आती हैं जहाँ से सब शुरू हुआ था?

यह कहानी उन लोगों के लिए है जो आज भी 'शाश्वत प्रेम' में विश्वास रखते हैं। इस किताब के हर पन्ने में मैंने एक ऐसी दुनिया बुनने की कोशिश की है, जहाँ बारिश की बूंदें भी एक गीत गाती हैं और हवाओं में उड़ती तितलियाँ खुशियों का संदेश लाती हैं।

उम्मीद है कि 'जिंदगी की लहर' की यह प्रेम कहानी आपके दिल को छुएगी और आपको अपनी खुद की किसी पुरानी याद की लहर में ले जाएगी।

लेखिका,

वैशाली चव्हाण

जिंदगी उस संमंदर जैसे होती है जहा पर समंदर की एक लहर संमंदर के जल को उस संमंदर से एक समय के लिए बहुत दूर कर देती है और फिर से उस संमंदर के जल मे एसी घुल-मिल जाती है की मानो वो कभी अलग हुए ही नहीं | ठीक इस तरह इंसान का जीवन भी एसी ही चलता है | कभी अचानक से कोई इंसान मिल जाता है की वो इंसान इसके लिए ही बना हो और फिर एक दिन कुछ एसे हो जाता है की वो इंसान उससे बिछड़ जाता है बिल्कुल इस समन्दर की लहर की तरह और हम इंसान उस शकस का इंतजार जिंदगी भर करते है| शायद वो हमारे जिंदगी मे फिर से चला आए | और बस हम इसी उम्मीद मे जीते रहते है |

बिल्कुल इसी तरह यह कहानी शुरू होती है| एक छोटे से गाव मे यह गाव एक नदी के पास बसा हुआ है| शायद यह नदी किसी समंदर से होती हुई पहाड़ मे खेलती है| और अपने साथ एक नई खुशबू और ढेर सारी खुशिया बह कर लाती है| इस नदी के पास बहोत सारी गाव की लड़किया और औरते आती है कुछ जल के लिए तो कुछ कपड़े धोने के लिए| इन भीड़ मे एक छोटीसी बची भी है जिसको पाठशाला का बहुत डर लगता है| और वो अपने माँ के साथ यह अक्सर आती रहती है| वो अपनी माँ से कभी दूर नहीं रह पाती क्या पता उसे इस दुनिया से डर लगता हो अभी तक आप को पता चल गया होगा की यह कहानी इस छोटिसी बची की है| इस बची का नाम है 'ममता' वो बिल्कुल अपने नाम जैसी ही थी| बिल्कुल मासूम उसमे ममता का सागर था वो हर

किसी की मदत करती थी| ममता एक गरीब घर की सुंदर लड़की थी लेकिन उसको पता नहीं था की वो सुंदर भी है| वो पढ़ाई से बहुत चिड़ती थी और उससे छुटकारा पाने के लिए वो अपने माँ से कहती मे तुमारे साथ काम करूँगी लेकिन उसकी माँ चाहती थी की वो पढ़ाई करे उसे इस दुनिया की अछि तहह से समज हो एक दिन ममता ने कहा की अभी वो आगे पढ़ाई नहीं करना चाहती वो घर पर रहकर माँ की मदत करना चाहती है| अभी तक उसे पता नई नहीं था की वो कितनी बड़ी गलती कर रही है एक छोटीसी बची को क्या पता होगा की पढ़ाई ज़िंदगी को जीना आसान करती है | लेकिन उसकी माँ ने उसे समजाने की बहुत खोशिस की फिर भी वो नहीं मानी फिर उसने पाचवी कक्षा के बाद पाठशाला जाना ही बंद कर दिया वो दिन भर घर का काम करती और शाम मे अपने सहलिया के साथ नदी के किनारे जाकर खेलती और रात मे अपनी माँ के साथ दिनभर की बहुत बाते करती| अब ममता बड़ी हो रही थी| फिर अचानक से एक दिन ममता के घर उसका बडा भाई और भाभी शहर से आते है| उसका बड़ा भाई शहर मे अफसर था और वह शहर मे उसकी बीवी से साथ रहता | ममता के घर मे वो और उसकी माँ दोनों ही रहते क्युकी ममता के पिताजी जब वो बहुत छोंटी थी तभी उनका स्वर्गवास हो गया था| वो उन दोनों को देख कर चोंकी उसे यकीन नहीं था की उसका बड़ा भैया कभी उनको मिलने के लिए गाव् भी आएगा| क्युकी उसका भाई बहुत समय से घर पर नहीं आया था| पिछली समय जब वो आया था तो ममता छोटीसी थी| खैर जब उसका भाई और भाभी आए तो ममता अकेली ही थी घर पर कुछ खोज रही थी शायद उसकी बचपन की गुड़िया ममता उस गुड़िया से बहुत ही प्यार करती थी शायद उसके पास वही

एक ही खिलौना हो ममता की नजर दरवाजे के पास गई उसने देखा की उसका बड़ा भाई आया है और साथ मे एक औरत भी है| ममता उस औरत को नहीं पहचान सकी वो उस औरत को पहली बार देख रही थी| तो वो तुरंत घर के आगन मे आई और कहने लगी भैया अंदर आवो फिर उसका बड़ा भाई सुधीर और वो औरत जो ममता नहीं पहचान पाइ वो दोनों घर के अंदर आए उस वक्त घर कुछ बिखरा हुआ था ममता ने जल्दी से घर ठीक किया और सुधीर और उस औरत को बैठने की जगह दी और फिर ममता ने रसोईघर मे जाकर पानी लाया और उन दोनों को दिया फिर सुदिर ने पानी पीते हुए बोला ममता माँ कहा है? ममता बोली माँ बाजार गई हुई है आती ही होगी इस वक्त तभी ममता ने पूछा भैया आप के साथ ये दीदी कोण है? सुदिर ने खासते हुए कहा माँ को आने दो फिर बताता हु और ममता ने अपना सर हिलाके जवाब दिया ठीक है | फिर घर अचानक से शांत हो गया ममता चुपके से उस औरत को देखती और फिर सुदिर को शायद उसने सोच लिया था की ये औरत उसकी भाभी है| और उतने मे माँ बाजार से लोटी और जब माँ ने घर के बाहर जूते और चपल देखि तो माँ ने बाहर से ही ममता को इशारेसे पूछा की कोण आया है| उतने मे ममता बोली माँ देखो तो सुदिर भैया शहर से आए है| यह सुन कर माँ के हाथ से बाजार की बॅग खुशी के मारे गिर गई और वो दोड़कर घर मे आई और जैसे ही सुदिर को देखा तो उनके आखों मे आसू आ गए और फिर उनोने सुदिर को झट से अपने गले लगा लिया| माँ इतनी खुश थी की उसकी नजर सुदिर से हट ही नहीं पाइ थोड़ी देर बाद सुदिर ने माँ को अपने पास बिठाया उतने मे ममता ने माँ को पानी लाकर दिया फिर माँ अपने आसू पूछते

हुई पानी पीने लगी| सुदिर ने माँ को देखा तो उसे इस बात का एहसास होने लगा की अब उसकी माँ बुड़ी होने लागि थी उनके बाल सफेद होने लगे थे और उनकी आवाज मे एक थकान सी थी| सुदिर माँ और ममता से बाते करने लगा | सुदिर ने बताया की वो अब जहा काम करता था वह पर उसका प्रमोशन हो गया है और उसने शादी भी करली है | सुदिर उसके साथ बैठने वाली लड़की की और इशाराकर कर कह रहा था| की माँ ये तुमारी बहु है इसका नाम शीतल है फिर शीतल ने माँ के पैर छूए | माँ ने हल्कीसी मुस्कान करते हुए शीतल को आशीर्वाद दिया| माँ ने सुदिर को कुछ भी शिकायत नहीं की लेकिन उनके मुस्कान मे वो शिकायत सुदिर को दिखी | ममता ये सब सुनकर बहुत खुश थी | की अभी उसके पास उसकी सहलियों की तरह माँ के सिवा अपने लोग भी है | बचपन से ममता और माँ दोनों ही इस घर मे रहते पर अब इनके अलावा घर मे और दो लोग भी रहने लगे | ममता को ये सब बाते अपनी सहीलियोको बतानी थी | पर उनके घर मे ये लोग आने की वजह से ममता आज सहलियों के साथ घर के बाहर नहीं निकाल पाइ | खैर ममता ने सोचा कल बता दूँगी | अब रात हो रही थी अंधेरा इस तरह पहल रहा था जैसे ठंडी के मॉसम मे ठंड, रात की चादनी टीम टीम कर रही थी और चाँद के किरणों मे आज कुछ नया था | रात का खाना सब ने साथ मिलकर खाया | आज सुदिर बहुत खुश था अपनी माँ और बहन को देख कर उसने आज रोज से कुछ जादा ही खाना खाया था | फिर रात मे खाना खाने के बाद ममता और माँ शीतल से बाते करने लगी | उनको पता चला की जहा पर सुदिर रहता था ठीक उसके सामने वाले मकान मे शीतल रहती थी | शीतल एक अछि घर की लड़की थी | वो हर रोज सुदिर

को खाना खाने के लिए अपने घर बुलाती क्यू की शीतल की माँ और बाबूजी के यह एक छोटासा होटल था | अब शीतल एक अनाथ लड़कीg थी उसके माँ-बाप हाली मे किसी दुर्घटना मे चल बसे थे | फिर सुदिर ने कहा माँ शादी बहुत जल्दबाजी मे हो गई | फिर माँ को ये बाते सुनकर शीतल के बारे मे बहुत बुरा लगा | और माँ ने शीतल को गले लगा लिया| और फिर माँ ने सुदिर से कहा इसे कभी रुलाना मत यह सुनकर शीतल के आखों मे आसू आ गए | अब माँ नाराज नहीं थी यह बाते करते-करते बहुत रात हो गई थी| अब सब सो गए अगली सुबह ममता शीतल को अपनी सहलियों से मिलवाने ले गई | शीतल ममता से बस कुछ चार-पाच साल बड़ी होगी | शीतल और ममता मे अछि दोस्ती हो गई थी | ममता शीतल को कभी सहलियों के पास ले जाती तो कभी नदी के पास एसे ही कुछ दिन गुजर गए अब वक्त आ गया था की सुदिर और शीतल शहर वापस जाए | फिर एक दिन सुदिर और शीतल शहर मे चले गए | फिर से ममता अकेल पड गई | घर शांत हो गया था अब ममता उदास हो गई थी | फिर शीतल और सुदिर के जाने के कुछ दिन बाद ममता के घर पर खत आया अब ममता के घर पहली बार किसी ने खत भिजवाया था | ममता खत देखकर बहुत खुश हुई | और ममता उस खत को लेकर सारे घर मे झूमने लगी फिर माँ ने ममता से कहा अरे ओ पगली सिर्फ खत देखकर ही खुश होगी या उसे पढेगी भी | ये तो बता की ये किसने भेजा है | फिर ममता ने अपनी माँ से कहा यह खत शहर से आए है | सुदिर भईया ने भेजा है | फिर माँ ने कहा क्या लिखा है सुदिर क्या वो ठीक से शहर मे पहुच गया? फिर ममता उस खत को पढने लगी सुदिर ने माँ को प्रणाम किया उसने लिखा की माँ मे शहर पहुच गया

यह पर मेने एक मकान खरीद लिया है | और अब वो उस नए मकान मे रहने के लिए बहुत जल्दी चला जाएगा| शीतल भी अछि है उसे तुम दोनो की बहुत याद आती है | और उसने नया मकान का पत्ता भी लिखा था | पत्र के साथ कुछ पैसे भी बीजवाये थे | माँ यह सब बाते सुनकर बहुत खुश हो गई थी | की अब सुदिर और शीतल अछि ज़िंदगी जियेंगे माँ ने ममता से कहा अगर तुम भी अछि तरह से पढ़ती तो तुमे सुदिर के पास भेज देती तुम वहा कुछ अच्छा जीवन जी लेती लेकिन तुम्हें तो पढ़ना-लिखना तो है नहीं | अगर तुम पढ़ना चाहती हो तो मे सुदिर से बात करके तुम्हें शहर के पाठशाला मे दाखिला दे देती हु तुम भी अपने भाई और भाभी के साथ शहर मे रहो | माँ की यह बात सुनकर ममता को बहुत गुस्सा आया और वो कहने लगि माँ मुझे आगे नहीं पढ़ना मे आपसे कितनी दफा कहु आप ये पढ़ने की जिद छोड़ क्यू नहीं देती | मे आपको छोड़कर कभी कही नहीं जाना चाहती मे हमेशा आपके पास ही रहूँगी | मेरा आपके सिवा कही मन नहीं लगता ये हमारा इतना प्यार गाव छोड़कर भला कोण उस शहर मे जाके रहेगा तुम ही बताओ यह गाव जैसा सुकून उस शहर के उची-उची बिल्डिंग मे है? माँ ने कहा तुम्हें कैसे पता चला की शहर कैसा है? हम तो कभी गाव से बाहर तो गए नहीं? अरे माँ मेरी जो छाया नाम की सहली हेना वो एक दफा शहर मे अपने चाचा के पास गई थी उसने मुझे बताया की शहर कैसा होता है खैर अब मे बाहर मेरी सहली से मिलने जा रही हु आते-आते शाम हो जाएगी फिर ममता चली गई | अब माँ घर मे एकेली थी | वो सोच ने लागि की मेरी बेटी मुझसे कितना प्यार करती है वो कभी मेरे सिवा कही नहीं रहती और फिर मेरे यह बढती उम्र जब मे इस दुनिया मे नहीं रहूँगी

तो मेरे ममता का क्या होगा वो किसीके सहारे जियागी सुदिर क्या उसे अपने साथ उसे शहर ले जाएगा | शीतल क्या उसे मेरा जेसा प्यार कर पायेगी या नहीं | माँ यह सोचकर परीशान होने लागि उन्हे ममता की चिंता होने लागि फिर उनके दिमाख मे एक खयाल आया की वो ममता की शादी कर दे लेकिन अभी ममता की शादी को वक्त था | अब शाम के पाच बज रहे थे माँ ममता का ही इंतजार कर रही थी उतने मे ममता चुपके से घर पर आई बिना शोर मचाया उसने पीछे से आकार माँ की आखों पर अपना हाथ थमा दिया और पूछने लगी बताओ कोण है माँ ने बड़ी प्यार से कहा मेरी ममता के सिवा और कोण होगा यह कहकर माँ ने ममता को अपनी पास खिचकर उसे गले लगा लिया | ममता ने देखा की माँ के आखों मे आसू थे फिर ममता ने पूछा माँ आप क्यू रो रही हो क्या मुझसे कुछ गलती हो गई है माँ कुछ नहीं बोली ममता के लाख पूछने के बाद माँ ने अपने हाथ ममता के सर परसे प्यार से घुमाया और कहा क्या तुम सचमे मुझे छोड़कर कही नहीं जावोगी फिर ममता ने कहा यह भी कुछ पूछने की बात है क्या? माँ आपसे एक बात कहू आप डाटेगी तो नहीं उसने माँ से प्रामिस लेलिया और कहने लगी माँ आप को पता हे की मे स्कूल क्यू नहीं जाती इसकी यही वजह है की अगर मे स्कूल गई तो आप मुझे सुदिर भैया की तरह शहर मे जाने के लिए कहोगी और मे आपको छोड़कर कही नहीं जाना चाहती ये बात सुनकर माँ चोक गई की और सोच मे पड़ गई की सचमे मेरी ममता मुझको कितना चाहती है और मे बावली अब तक सोच रही थी की उसे पड़ने का डर लगता है लेकिन मे कितनी गलत थी | फिर माँ ने ममता से कहा अरे वो पगली तुम थोडीना मेरे पास जिंदगी भर के लिए रहोगी एकना एक दिन

तो तुमारी शादी होगी और तुम अपने ससुराल चली जावोगी यह बात सुनकर ममता रोने लगी और रोते-रोते कहने लगी की माँ मे जिंदगी मे कभी शादी नहीं करूंगी आप को छोड़कर मे कभी कही नहीं जाने वाली माँ ने ममता को समजानेकी बहुत कोशिश की लेकिन ममता ने माँ की एक बात नहीं सुनी और वो बिना खाना खाये आज सो गई थी | फिर माँ ने सुबह ममता के पसंद का खाना बनाया और ममता को कहा ठीक है | अब गुस्सा मत कर जल्दी से खाना खाले ले फिर ममता ने और माँ ने साथ मिलकर हस्ते हुए खाना खाया एसे ही हस्ते-खेलते दिन गुजर रहे थे | सुदिर का खत भी महीनों मे एक बार आ जाता था और ममता भी सुदिर के खत का जवाब भेजती थी | एसे ही कुछ साल गुजर गए अब ममता की शादी की उम्र हो रही थी | और अचानक से माँ भी बीमार हो गई थी एक रात तो माँ को बहुत बुखार आया था उनका पूरा बदन तड़प रहा था और वो खासी से भी परीशान थी | माँ ने ममता से कहा तुम सुदिर को जल्द से जल्द खत लीखो और उसको गाव बुलवाओ फिर ममता ने माँ के कहने पर सुदिर को खत लिखा कुछ दिन बात सुदिर ने ममता के खत का जवाब गाव भेजा उसमे लिखा था की माँ यह मे थोड़ा सा व्यस्त हु जैसे ही मुझे समय मिले तो मे अगली महने की दस तारीख को शीतल को लेके गाव आउगा और सुदिर ने साथ मे कुछ पैसे भी भेजे थे और लिखा था ममता माँ का अछि तरह से खयाल रखना मे जल्द ही गाव आ रहा हु | जैसे ही ममता ने यह खत पढा तो माँ खामोश हो गई उसकी खामोशी मे साफ-साफ दिख रहा था की वो सुदिर के इस जवाब से बहुत नाराज थी लेकिन उसने ममता से कुछ नहीं कहा | धीरे- धीरे माँ ने सुदिर का इंतजार करना छोड़ दिया था | शायद

अब उनकी उमीद खतम होने लगी थी | माँ अब बिस्तर मे ही रहती उनको अब चलना भी बडा तकलीफसा लगता | एक दिन अचानक से माँ की तबीयत इतनी खराब हो गई थी | की अब वो ठीक से ममता से बोल भी नहीं पाती माँ ने आज तो कुछ खाया भी नहीं था | बस अपने बिस्तर मे पड़ी रहती और वहासे बाहर की और देखती शायद ओ सुदिर का इंतजार कर रही हो माँ आखरी बार सुदिर को देखना चाहती थी उसे कहना चाहती थी की अब तू ही मेरी ममता का ख्याल रख लेकिन सुदिर के आनेसे पहलेही अचानक माँ ने अपनी आखे बंद कर दी ममता बहुत डर गई थी ममता ने जोर-जोर से माँ कहके पुकारा लेकिन माँ ने अपनी आखे नहीं खोली,नहीं कुछ हलचल की भगवान भी हम इंसान के साथ कैसा बर्ताव करता है एक माँ को आखरी बार अपने बेटे को देखने भी नहीं दिया | ये सब देख कर ममता बहुत जोर-जोर से रोने और चिलाने लगी | ममता की आवाज सुनकर गाव वाले सभी ममता के घर और आगन मे आए देखते ही देखते अब ममता का घर भीड़ से भरा हुआ था | फिर थोड़ी देर बाद गाव के वैद आए और फीर वैद जी ने ममता की माँ को देखा और गाव के लोगों से कहा की यह अब इस दुनिया से चली गई है | वैद जी की यह बात सुनकर सभी को बहुत बुरा लगा अब सबको ममता की फिक्र होने लगी थी | अब गाव वालों ने एक आदमी को शहर भेज कर सुदिर और उसकी बीवी शीतल को गाव बुलवाया था | अभी तक ममता को इस बात का कुछ पता नहीं था | फिर थोड़ी देर बाद गाव की कुछ औरतों ने ममता से कहा की तुमरी माँ अब इस दुनिया मे नहीं रही यह बात सुनकर ममता जमीन पर गिर पड़ी और जोर से चिलाने लगी वो इतनी दुखी हो गई थी की उसको कुछ समज ही नहीं आरहा था | यहा

पर गाव के सभी लोग थे फिर भी ममता अकेला महसूस कर रही थी इस समय उसका अपना यहा कोई नहीं था छाया भी अपने चाचा के घर शहर गई हुई थी |फिर थोड़ी देर बात ममता का भैया सुदिर और शीतल भाभी आगये और ममता ने जैसे ही अपने भाई को आते हुए देखा तो वो झट से अपने भाई के गले लग गई और रोने लगी | इस तरह से कुछ दिन बित् गए सुदिर और शीतल करीब एक महने तक गाव मे ही रहे फिर सुदिर ने फेसला किया की वो ममता को अपने साथ शहर लेके जाएगा | फिर सुदिर ने एक दिन ममता से बात करनी चाही लेकिन अब ममता किसी से जादा बात नहीं करती अक्सर ओ अपनी माँ की साड़ी हाथ मे लेकर रोती रहती सबने उसे समजाने की बहुत कोशिश की लेकिन ममता यह सब पीछे छोड़कर आगे नहीं बढ़ना चाहती थी | फिर सुदिर ने बहुत हिम्मत जुटाके ममता से बात की लेकिन अभी भी सुदिर ममता के आखों मे नहीं देख पाता शायद सुदिर यह सोचता की मै किस मुह से ममता को कहु की मेरे साथ शहर चले क्युकी सुदिर सही वक्त पर घर पर नहीं पोहचा था जिस वक्त ममता को सुदिर की सबसे जादा जरूरत थी तब वो ममता से कही दूर था ममता को संभालने वाला उसका अपना कोई नहीं था | वो बिल्कुल अकेली महसूस कर रही थी | फिर जैसे तैसे दुपहर को खाने के समय सुदिर शीतल की और देखता फिर ममता की और फिर थोड़ी देर बात शीतल ने बात करनी शुरू की और सुदिर को थोड़ी हिम्मत मिली | अब सुदिर ममता की और देखकर बड़ी प्यार से बोल रहा था की ममता कल हम सब शहर जाने वाले है तुम अपना सामान बांध लेना | ममता ने पहलेही अपने माँ को खो दिया था | अब वो अपना घर और यह गाव छोड़कर कही नहीं जाना चाहती थी | इसके

बावजूद भी ममता ने अपने भाई से कुछ नहीं कहा | सिर्फ अपना सर हिलाकर जवाब दिया की वो शहर जाने के लिया राजी है | ममता के आखों मे पानी था लेकिन उसने अपने आखों से एक बूँद भी नीचे गिरने नहीं दी | थोड़ी देर बात ममता वहा से उठकर बाहर आगन मे चली गई | आज ममता का आखरी दिन था इस गाव मे उसे लग रहा था की एक बार वो यहा से चली गई तो कभी भी वापस नहीं आएगी | ममता अपनी सहलियों से आज आखरी बार मिलने वाली थी | और आज ही छाया शहर से गाव आई थी गाव मे आते ही छाया को पता चला की ममता की माँ अब इस दुनिया मे नहीं रही यह बात सुनकर छाया ममता के घर की और दोड़ पड़ी | ममताने अपने सबसे करीबी दोस्त छाया को देखा और उसे अपने गले लगा लिया दोनों बहुत रोई फिर छाया ने ममता को सहारा देते हुई कहा मे हुन ममता तेरे साथ तू चिंता मत कर सब ठीक हो जाएगा | लेकिन छाया को पता नहीं था की ममता कल हमेशा के लिए शहर जाने वाली थी | फिर छाया और ममता नदी के पास गई | काफी समय यह बित गया पता ही नहीं चला अब सूरज भी कही पहाड़ मे सोने जा रहा था शाम हो रही थी वह जग इतनी खामोश थी की नदी के पानी की आवाज ममता और छाया की कानों मे गुजर रही थी आकाश मे पंछी उड़ रहे थे और ममता उस नदी की और मुहकर बैठी थी और उसके नजदीक ही छाया भी बैठी हुई थी छाया ने ममता से बात करने की कोशिश की लेकिन ममता बहुत चुप थी और किसी खयाल मे खोई हुई थी | ममता सोच रही है की मेरी ज़िंदगी भी कैसे है मे पहले कितना खुश थी अपने माँ के साथ माँ ने एसा मेरे साथ क्यू किया | उनको तो पता था ना की मे उनके सिवा नहीं रहती ओ मुझे अकेले छोड़कर क्यू

गई जाना था तो मुझे भी अपने साथ लेकर जाती | ममता अपने आप को उस नदी के पानी मे देख रही थी अब तो उसे एसा लग रहा था की ये वो ममता है ही नहीं कोई और है जो उसे इस नीले पानी मे दिखाई दे रही है | छाया ने बहुत प्रयास किया ममता को हसाने का लेकिन ममता चाहते हुई भी हस या बोल नहीं पाई | ममता छाया को सब बताती थी उससे कुछ नहीं छुपाती | जब ममता ने छाया को बताया की वो कल अपने भाई और भाभी के साथ हमेशा के लिए शहर जाने वाली है यह सुनकर छाया को बहुत दर्द हुआ उसने ममता को गले लगा लिया और फिर रोने लगी | लेकिन छाया ने उसे यही रहने की गुजारिश नहीं की शायद छाया जानती है की ममता को शहर जाना जरूरी है | फिर छाया और ममता कुछ देर बाते करने लगी | अब बहुत देर हो गई तो छाया ने ममता से कहा हमे चलना चाहिए ममता और छाया एक दूसरे का हाथ पकड़कर चलने लगी चलते-चलते वो अब घर पहुच गई थी | छाया ने ममता से कहा कल मुझे मिले बगर नहीं जाना हम कल फिरसे मिलेंगे | यह कहकर छाया अपने घर चली गई | अब रात हो चुकी थी सुदिर ने ममता को सोते समय कहा ममता तुम अभी अपना सामान पैक कर लो हम सुबह जल्दी चले जाएंगे मुझे शहर जाके कल ही काम पर भी जाना है | फिर ममता ने अपने कपड़े लिए कुछ जरूरी समान और इसके साथ उसके माँ की एक प्यारी सी साड़ी और उसकी सबसे करीब रहने वाली गुड्डीया ली थी | ममता सोने चली गई ममता उसी बिस्तर पर सोई जहा उसकी माँ सोती थी ममता अब भी रो रही थी | उसके आसू रुख ही नहीं रहे थे | ममता रोते-रोते ही सो गई | अगली सुबह ममता बहुत नाराज थी यह घर छोड़कर वो कही और अपनी दुनिया नहीं बसाना चाहती

थी लेकिन क्या करे ममता के ज़िंदगी मे यह दिन भी आगया जिसे कभी उसने अपने खाबोमे भी नहीं देखा था | उसने आखरी बार पूरे घर को एसा देखा की वो पूरे इस घर की हर एक यादे अपने आखों मे बसा ली हो | अब ममता अपने भाई और भाभी के साथ चलने के लिए तयार हो गई थी और इसे समय छाया आगई | ममता छाया को देखर रोने लगी छाया ने ममता को गले लगा लिया | और बोली ममता शहर जाओगी तो हमे खत जरूर भेजना और हस्ते हुए कहा हमे भूल मत जाना सुदिर ने ममता का बॅग अपने हाथ मे लिया और इस तरह ममता ना चाहते हुए अपनी पसंदीती ज़िंदगी छोड़कर कही अनजान शहर चली गई | ममता इस शहर की भीड़-भाड़ देखकर और भी बैचन होने लगी थी यहा के लोग उसे अनजान थे | ममता अब शहर के उन मकान मे रहती जहा पर उसका मन बिल्कुल भी नहीं लगता था | अब जैसे-जैसे वक्त गुजर रहा था वैसे ही ममता अब ठीक होने लगी उसने अपनी ज़िंदगी यहा सवार ली | अब ममता अपना समय कुछ घर का काम करने मे लगाती तो कुछ समय वो बाग मे जाकर वहा पर गुजारती | ममता छाया हो खत भी भेजती थी | अब ममता को शहर मे दो साल हो गए थे | अब उसे शहर की भीड़-भाड़ मे जादा घुटन महसूस नहीं होती थी | लेकिन इतने समय हो गये फीर भी ममता अपने माँ को नहीं भुला पाई जब भी माँ की याद आई तो वो अपने माँ की साड़ी ओढ़कर सो जाती थी | और ममता की इस शहर मे कोई दोस्त नहीं थी इसलिए वो अपनी गुड़िया से आज दिन मे क्या हुआ उसने आज क्या किया सब बताती | जैसे ओ अपनी माँ को बताती थी | अब ममता वाकई मे शादी लायक थी | एक दिन ममता के भाभी ने सुदिर से कहा की ममता की शादी की उम्र हो रही है| एक अच्छासा

लड़का देखकर ममता की शादी करवादों | उसकी ज़िंदगी भी सवर जाएगी | सुदिर ने कहा मे ममता को एक अच्छे से खान-दान मे देना चाहता हु जो मेरी ममता को खुश रख सके | कुछ दिन बाद शीतल के दुरके चचेरी बहन की शादी थी | और इस शादी मे सुदिर और शीतल जाने वाले थे लेकिन वो ममता को घर मे अकेले नहीं छोड़सकते थे तो शीतल ने ममता को कहा तुम भी हमारे साथ चलो ममता ने तुरंत नहीं बोल दिया फिर सुदिर ने ममता से कहा हमे दो दिन लग जाएंगे और तुम अकेली यहा रहकर क्या ही करोगी इस से अच्छा तुम हमारे साथ चलो | अब ममता को ना चाहते हुए भी शादी मे जाना पड़ा | जिस दिन शादी थी उसके अगली रात को ममता अपने भाई और भाभी के साथ निकाल गई | शादी के दिन ममता को पता चला की उसका समान ट्रेन मे ही रह गया था | अब उसको न चाहते हुए भी अपनी भाभी की साड़ी पहनी पड़ी | फिर ममता ने शादी के दिन अपनी भाभी की लाल रंग की साड़ी पहनी हुई थी| उस साड़ी मे ममता का निखार और भी खूबसूरत लग रहा था | हालकी ममता को जादा सजनासवर्ण पसंद नहीं था | वो सिर्फ बिंदी और काजल लगाती थी | ममता का रंग गोरा था और उसके बाल घने और उसके कमर तक थे| वो दुबली सी थी आज पहली बार उसने साड़ी पहनी थी आज वो दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की लग रही थी | उसके आगे दुल्हन भी फीकी लग रही थी | ममता जितनी बाहर से अछि थी उतनी ही अंदर से पवित्र थी उसे किसी की कुछ शिकायत नहीं थी | फिर भाभी ने ममता को अपने रिश्तेदारों से मिलवाया ममता बड़ी प्यार से सबसे बाते करने लगी | उन रिश्तेदार को ममता बहुत पसंद आइ थी | फिर उन रिश्तेदार ने थोड़े समय के बाद सुदिर से अपने बेटे

राकेश की लिए शादी की बात की राकेश की माँ ने पूछा की आप अपनी बहन की शादी इस साल करना चाहते है | हमारा लड़का राकेश अच्छा पड़ा-लिखा है | और वो शहर मे अछि जगह नोकरी कर रहा है | उसे तनखा भी अछि मिलती है | सुदिर यह सुनकर खुश हुआ उसने पूछा की लड़का यहा पर मोजूद है | राकेश की माँ ने राकेश को बुलाया और सुदिर से मिलवाया फिर थोड़ी देर तक सुदिर ने राकेश से बात की सुदिर को राकेश अच्छा लगा और उसने कहा मे आप को सोचकर बताता हु | थोड़ी देर बात राकेश की माँ ने राकेश को दूर से ममता की और देखकर कहा यह लड़की हमने तुमारे लिए पसंद की है | क्या तुम इससे शादी करोगे | राकेश बस ममता को ही देखता रहा उसने कुछ जवाब नहीं दिया बस एक हल्कीसी मुस्कान दे दी | शायद राकेश ममता को जानता था | फिर राकेश को याद आया यह वही लड़की है जिसको राकेश ने बाग मे देखा था | जिस शहर मे ममता रहती उसी शहर मे राकेश जॉब करता था | अभी तक ममता को ये सब बाते पता नहीं थी | और उसने राकेश को देखा भी नहीं था | फिर शादी होने के बात ममता अपने भाभी-भाई के साथ शहर मे चली गई | घर जाते ही ममता के नाम का खत गाव से आया हुआ था | ममता वो खत देखकर बहुत खुश हुई यह खत गाव से ममता की सहली छाया का था | खत मे लिखा था की छाया जल्द ही शहर आने वाली है अपने चाचा के पास कुछ दिन के लिए यह बात सुनकर ममता नाचने लगी और भाभी को बोली मेरी सबसे प्यारी सहली यह आने वाली है अब हम बहुत मजे करंगे साथ मे घूमेंगे बाग मे जाकर वक्त साथ मे बिताएगे गाव की ढेर सारी बाते करेंगे | उसी रात जब ममता अपने कमरे मे गई हुई थी तब सुदिर ने शीतल से ममता की शादी

वाली बात की यह सुनकर शीतल भी खुश थी | शीतल ने कहा यह बहुत अच्छा रिश्ता है | आप ममता की शादी यहा करा दो फिर ममता इसे शहर मे रहेगी हमारे नजदीग | फिर अगली दिन दुपहर को सुदिर और शीतल ने ममता से शादी की बात की इस बार ममताने तुरंत कहा की भैया मुझे कुछ समय चाहिए सोचने के लिए | सुदिर ने ममता से कहा ठीक है तुम अछि तरह से सोचलेना और फिर बतादेना यह बोलकर सुदिर घर से बाहर चला गया | अब घर का सब काम होने के बात शीतल ममता के कमरे मे आई | ममता उस वक्त छाया को खत लिख रही थी | शीतल ने ममता से थोड़ी देर इधर-उधर की बाते करना शुरू की थी | ममता बहुत हुशयार लड़की थी उसे तुरंत पता चल गया था की शीतल उससे शादी की बात करने आई है | लेकिन ममता ने शीतल से कुछ नहीं कहा वह शीतल से अछि तरह बाते कर रही थी | फिर शीतल बोली की जो तुमारे लिए रिश्ता आया है वो बहुत अछे लोग है जहा पर तुम बहुत खुश रहोगी और तूमारा होनावाला पती तो इसे शहर मे नोकरी करता है और फिर तुम शादी के बाद थोडीना अपने सास-ससुर के पास गाव मे रहोगी तुम तो यह इसी शरह मे रहोगी हमारे नजदीक और राकेश भी बहुत समजदार लड़का है वो तुम्हें हमेशा खुश रखेगा और एकना एक दिन तुम्हें शादी तो करनी है ही ना तुम थोडीना हमेशा के लिए एसी अकेली रहोगी जिंदगी जीने के लिए हमे किसी अपने का सहारा चाहिए होता है | जिससे हम अपनी हर बाते कर सके जो हमे अकेल महसूँस न होने दे ममता मुझे तुम पर पूरा भरोसा है तुम हमे नाराज नहीं करोगी यह कह कर शीतल वहा से चली गई | अब ममता ने छाया को खत भेज दिया | फिर अगले ही हफ्ते ममता की दोस्त छाया शहर आई | आज

ममता ने अपने बाल धुये थे और वो आगन मे खुरची लगाकर सूरज की और पीठ करके कुछ अकबार मे देख रही थी ठीक उसी वक्त छाया पीछे से आकार ममता के आखों पर अपने हाथ रखकर पूछने लगी बताओ कोण है | ममता ने छाया की आवाज से उसे पहचान लिया और झटसे खड़ी होकर शीतल को गले लगा लिया | जब दो पुरानी सहलिया बहुत बरसों के बाद मिलती है तो उन्हे एसा लगता है की न जाने कोई खोई हुई चीज उन्हे मिल गई हो जिसे वो बहुत दिनों से खोज रही हो | ममता ने अपनी दोस्त को अपने भाभी से मिलवाया भाभी भी शीतल को देखकर खुश हुई | शीतल और छाया पहलेसेही एक-दूसरे को पहचानती थी | उन्हे ममता पहले ही गाव मे मिलवाया था | भाभी ने ममता और छाया को चाय दी | और हस्ते हुई कहा अब तो आप दोनों की बाते बहुत लंबी चलेगी इतनी दिनों बात जो मिली हो | फिर छाया ने हस्ते हुए कहा भाभी दिनों बात नहीं सालों बात कहो | फिर भाभी वहासे चली गई | छाया और ममता बहुत घंटे तक बाते करती रही फिर शाम पाच बजे छाया अपने चाचा के घर चली गई | ममता और छाया के बीच मे तय हुआ की वो दोनों कल बाग मे मिलेंगे | अगली दिन छाया और ममता उसी बाग मे गए जहा पर ममता हमेशा जाती थी | उस बाग मे बहुत हरे-भरे पेड़ थे और अलग-अलग पंछी भी वह पर थे एक सुकून था वह पर उसी जगह राकेश ने पहली बार ममता को देखा था | ममता ने छाया को बाग घुमाया अब छाया थक गई थी उसने कहा ममता क्या हम इस जगह थोड़ी देर बैठ जाए | ममता ने हस्ते हुए कहा छाया तुम क्या बूढ़ी हो गई हो जो तुमरे पैर दर्द कर रहे है | फिर वो दोनों एक घने पेड़ के नीचे बैठ गई उसी वक्त गोले वाले की आवाज छाया के कान पर पड़ी जैसे ही

गोला लेलों एसी आवाज आई तो छाया ने ममता की और देखा अब ममता समाज गई थी की छाया को गोला खाना है | और हर किसी का मन होना की धूप मे घने पेड़ के नीचे सुकून से बैठकर गोला खाये तो फिर ममता ने दो गोले खरीद लिए एक अपने लिया और दूसरा छाया के लिए अब दोनों गोले खा रहे थे तब छाया ने देखा की ममता के पास लाल रंग का गोला है उसे देखकर छाया ने ममता से कहा तुम्हें लाल रंग पसंद है | ममताने हस्ते हुई कहा हा मुझे लाल रंग अच्छा लगता है यह बात सुनकर छाया ने बोला तुम्हें पता है लाल रंग तो प्यार का होता है ममता बोली एसा कुछ नहीं होता तुम चुपचाप अपना गोला खावोना मुझे इस तरह परिशान मत करो | फिर दोनों ने बड़े मजेसे अपना-अपना बर्फ का गोला खतम किया छाया ने ममता से कहा ममता मेरी अगले महीने शादी होने वाली है यह बात सुनकर ममता चोक गई और बोली पगली मुझे अब बता रही है | छाया ने कहा अरे मे तुम्हें यह बताने के लिए ही चाचा के पास इस शहर मे आई हु फिर क्या पता शादी होने के बात मे कभी तुमसे मिलूँगी या नहीं | ममता बोली चल ठीक है अब ये तो बतादे की हमारे जीजाजी क्या करते है और कहा रहते है केसे दिखते है क्या तुम कभी उनसे मिली की नहीं और कब है तुमरी शादी ममता के सवाल खत्म नहीं हो रहे थे | फिर छाया ने ममता से कहा अरे ओ पगली बस कर कितने सवाल पूछेगी जरा सास तो ले | छाया ने शरमाते हुई कहा वो इलहाबाद मे रहते है | स्कूल के मास्टर है हमने सिर्फ तस्वीर मे ही देखा है अछे है और शादी यही पर होगी अगले महीने दो तारीख को तुम्हें जरूर आना है | तुम हमारी एकलोती दोस्त हो इसलिए सबसे पहले हमने तुमसे ही कहा और जब तक शादी नहीं हो जाती हम इसे शहर मे

रहेंगे और हर रोज मिलेंगे अब तुम बताओ तुम कब कर रही हो शादी ? फिर ममता ने कहा क्या पता वैसे तो सुदिर भैया बोल रहे थे की हमारे लिए एक बहुत अच्छा रिश्ता आया है | लड़का इसी शहर मे नौकरी करता है | लेकिन हमने उनसे कुछ वक्त मांगा है फिर छाया ने कहा जादा सोचो मत अगर लड़का वाकई मे अच्छा है तो हा कर दो | तुम तो कितनी नसीब वाली हो जो शादी के बाद भी इसे शहर मे रहोगी अपने भईया और भाभी के नजदीक जब भी उनकी याद आएगी तो तुरंत चली आओगी | हमे देखो हम तो शादी के बात बहुत दूर चले जाएंगे ममता क्या तुमने अपने होने वाले पती को देखा है की नहीं ? ममता ने कहा अभी तक तो नहीं और फिर वो दोनों अपने घर चले गई | ममता अब सोच मे पड़ गई उसे कुछ समाज नहीं आ रहा था | फीर ममता ने रात भर इस बारे मे बहुत सोचा और अगली सुबह ममता ने शीतल से कहा की भाभी मे तैयार हु इस शादी के लिए आप भैया से कह देना ममता की यह बात सुनकर शीतल बहुत खुश हो गई और उसने ममता के माथे को चुम्ब लिया | शीतल ने सुदिर से बात करनी चाही लेकिन सुदिर आज बहुत व्यस्त था और वो सुबह जल्दी काम पर चल गया था | फिर शीतल ने रात को राकेश से बात की ममता अब शादी के लिए तयार है तुम लड़कों वालों से बात कर लेना | कुछ दिनों के बाद सुदिर ने ममता की सास से बात की फिर उन्होंने तय किया की इनकी शादी दो महीने के बात कर लेंगे | अभी इस महीने मे सगाई कर लेते है सब कुछ तय हो गया था | अगले ही हफ्ते सगाई थी घर अबसे ही सज रहा था जैसे मानो कुछ बड़ा त्योहार हो सुदिर चाहता था की वो ममता की शादी बड़े धूम-धाम से करवाए क्युकी ममता उसकी एकलोती और घर की छोटी बेटी थी |

सुदिर और शीतल ने ममता को बड़े प्यार से पाला था जैसे की ममता उनकी ही लड़की हो | सुदिर चाहता था की मेरी बहन हमेशा खुश रहे वैसे लड़कों वालों की कुछ जरूरते नहीं थी | उने सिर्फ ममता चाहिए थी फिर सगाई वाले दिन छाया सुबह ही ममता के घर उसे तयार करने के लिए आई थी आज ममता ने हरी रंग की साड़ी उस साड़ी के लाल रंग के किनारे थे वह पहनी हुई थी | आज ममता ने पहली बार चूड़िया पहनी थी वो चुड़िया बिल्कुल उस साड़ी के ऊपर मैच हो गई थी और तो और उसने बालों मे गजरा भी लगाया था आज वो इतनी खूबसूरत दीख रही थी भला वो खूबसूरत क्यू न दीखे आज वो अपने साजन के लिए सज रही थी |अब सब महमान भी आ चुके थे सब लोग ममता का इंतजार के रहे थे | फिर थोड़ी देर बाद ममता अपने हाथ मे चाय का ट्रे लेके आई और सबको चाय देने लगी उसने राकेश को भी चाय दी लेकिन उसने राकेश की और देखा भी नहीं फिर उन दोनों की सगाई भी हो गई अभी तक ममता ने राकेश को नहीं देखा था | ममता ने सिर्फ राकेश की पैरे की और देखा था राकेश ममता से कुछ बात करना चाहता था लेकिन कुछ कह नहीं सका | खैर सगाई होने के अगले हफ्ते ही ममता के घर एक खत आया था वो खत किसी और ने नहीं बल्कि राकेश ने भेजा था | ममता ने जैसे ही खत का लिफाफा खोला तो उसने देखा की उसमे एक झुमका और उसी के साथ खत था| ममता ने वो झुमका पहचान लिया था वो झुमका ममता का ही था जो उससे वही बाग मे खो गया था जहा पर वो अक्सर जाया करती थी | फिर ममताने खत पढ़ा राकेश ने लिखा था ममता ये तुम्हरा ही झुमका है जो हमे बाग मे मिला था हम भी उसी बाग मे आया करते है हमने उसी बाग मे पहली दफा

आपको देखा था | जब आप कुछ बच्चों से बात कर रही थी तभी आप का झुमका वह पर गीर गया हमने बहुत कोशिश की आपको आवाज भी लगाई लेकिन आप वहा से जा चुकी थी | फिर हम अगले दो-तीन दिन वही जगह आए लेकिन आप दिखी ही नहीं फिर अचानक आप उस बनारस वाले शादी मे मेरे सामने आई लेकिन मे अगर आपसे कुछ कहता तो आपको अच्छा नहीं लगता इसलिए मेने आपसे कुछ नहीं कहा सगाई वाले दिन भी मुझे आपसे बात करनी थी लेकिन हमे वक्त नहीं मिला | खैर आप इस रिशतेसे खुश तो हेना आप ने मुझे देखा तक नहीं आप पर कोई जबरदस्ती तो नहीं अगर आपको यह रिश्ता पसंद नहीं तो आप हमे जरूर कह सकती है | राकेश ने उसका शहर का पता भी लिखा था और कहा था की इसे पते पर आप हमे हमारे खत का जवाब भेजना हम आप के जवाब का इंतजार करेंगे | यह सब पड़कर ममता को अच्छा लगा वो सोच रही थी यह कितने अछे और सुलझे हुए इंसान है मे इनके साथ वाकई मे खुश रह पाउगी फिर ममता ने अपनी गुड़िया ली और उससे कहने लगी देखो तो गुड़िया रानी राकेश जी कितने अछे इंसान निकले वह मुझे पहलेसेही पहचान ते थे और तो और उन्हे हमारा कितना खयाल भी है वो हमसे पूछ भी रहे है की क्या हम इस रिश्ते से सहमत है या नहीं क्या हमे राकेश जी को अपना जवाब लिखना चाहिए या नहीं फिर ममता ने गुड़िया को बाजू मे रखकर राकेश जी के खत का जवाब देते हुए लिखा राकेश जी को ममता का प्रणाम हमारा झुमका लोटाने के किए आपका शुक्रिया यह रिश्ता हमारे समती से ही हुआ है इसमे कोई शिकायत नहीं है और शादी से पहले अपने पती को नहीं देखा जाता हालकी हमारे भैया ने आपकी तस्वीर दिखाई थी और हमे पता है की

आप बहुत अछे इंसान है हमारे लिए तो इतना ही काभी है की आप हमारी इजाजत का इतना समान करते है हमे आपसे कोई शिकायत नहीं आपने भेजे हुए तोफ़े हमे बहुत पसंद आए आपकी ममता यह लिखकर ममता ने खत राकेश को भेज दिया | यह सब बाते ममता ने छाया को बताई थी अब छाया और ममता दोनों की शादी जल्दी ही होने वाली थी वो अब हर समय अपने शादी कि ही बात हर वक्त एक-दूसरे से करती | अब कुछ यह दो दिनों मे छाया की शादी होने वाली थी | इसलिए अब ममता छाया के चाचा के घर अक्सर जाया करती थी छाया की अपनी कोई बहन नहीं थी इसीलिए ममता ही छाया के साथ हमेशा रहती ममताने अपने हातोसे छाया को शादी के दिन सजाय था | अब छाया की बिदाई का समय आ गया था | ममता ने छाया को गले लगाकर कहा की अब तो तुमारी शादी हो गई इसका मतलब है नहीं की तुम मुझे भूल जावो समजी पगली मुझे खत जरूर लिखना और बताना की कैसे चल रही है तुमारी नई ज़िंदगी और हा अगले महीने दस तारीख को इस शहर मे जरूर आना मेरी शादी मे ठीक है भूल मत जाना | यह कहकर ममता अपने घर लोट आई | अब ममता नाराज थी वो जैसे ही घर आई अपने कमरे मे चली गई और अपने अलमारी से माँ की साड़ी निकालकर उसे अपने गले से लगाकर रोने लगी | आज जब छाया की बिदाई हो रही थी उस वक्त जिस तरह से छाया के माँ बाबूजी छाया को गले लगाकर रो रहे थे | छाया को समजा रहे थे की अब वही तुमरा घर है वह अछि तरह से रहना रोना मत वह सुनकर और देखकर ममता को उसकी माँ की याद आरही थी | उसे लग रहा था की जब उसकी बिदाई होगी तब उसे गले लगाने वाली उसकी माँ उसके पास नहीं होगी यह सोच-सोचकर ही

उसे और रोना आ रहा था | हालाकी उसके पास अपने भईया और भाभी थे | लेकिन माँ तो माँ होती है ना खैर अब ममता रोते-रोते ही सो गई जब वो सुबह उठी तो उसके आखे रोने की वजह से सूज गए थे उसने अपनी मुह पर पानी मारा और अपने कमरे से बाहर चली आई सुदिर काम पर जा चुका था शीतल घर की सफाई कर रही थी आज ममता को उठने मे देर हो गई थी शीतल ने ममता की और देखा और पूछा क्या बात है ममता तुमरी आखे सूजी क्यू है क्या तुम रो रही थी यह बात सुनकर ममता अपने भाभी के गले लग गई और फ़ुटफूटकर रोने लगी | फिर शीतल ने कहा इस तरह परीशान मत हो हम हेना तुमरे साथ तुम अकेली कहा हो | तुम मेरी बेटी जैसी हो अब जाओ नहालों आज हमे तुमरे लिए कपड़े खरीदने भी जाना है | अब तुमारे शादी को थोड़े ही दिन बाकी है | शाम को शीतल और ममता शादी की खरेदी करने बाहर गई थी दोनों बहुत थक चुकी थी तो शीतल ने सुदिर से कहकर आज रेस्टोरन्त मे ही खाने की जिद की फिर रात को सुदिर ममता और शीतल के साथ खाना खाने बाहर गया उसी रेस्टोरन्त मे राकेश भी आया था | सुदिर ने राकेश को देखा और वो खुश हो गया फिर इन चारों ने साथ मे खाना भी खाया सुदिर ने खाते हुए राकेश से पूछा की तुम यहा पर कैसे राकेश ने हस्ते हुए कहा भईया इस शहर मे तो मे अकेल ही रहता हुआ और आज जहा पर मेने खाने की मेस लगाई है वह आज छुट्टी है इसलिए आज यह पर आया हु सुदिर ने कहा अच्छा है इसे बहाने हम लोग मिल सके ममता बहुत चुप थी वो सिर्फ राकेश और सुदिर की बात सुन रही थी | भईया सामने थे तो आज भी ममता ने राकेश को नहीं देखा था | शीतल ने सुदिर को इशारे से कहा की हम थोड़ी देर यहा से दूर जाते है

ताकी ममता राकेश से बात कर सके फिर खाना खतम होने के बाद पहले सुदिर टेबल से दूर काउन्टर के पास चला गया और फिर शीतल वॉशरूम के बहाने से चली गई अब उस टेबल पर सिर्फ राकेश और ममता थी | राकेश ने ममता से कहा क्या आज आप हमे नहीं देखना चाहती फिर ममता ने धीरे से राकेश की और देखा | राकेश और ममता पहली बार एसे एक-दूसरे के सामने बैठकर एक-दूसरे को देख रहे थे | वैसे तो ये दोनों बहुत बाते करते लेकिन सिर्फ खत मे | ममताने हलकिसी मुस्कान दी फिर बोला शादी की सब तयारी हो गई की नहीं राकेश ने जवाब दिया होगई अब सिर्फ आपको ले जाना है | अब सुदिर और शीतल लोट आए और सुदिर राकेश को कहने लगा की अब हमे जाना चाहिए यह कहकर वो चले गए राकेश ममता को ही देख रहा था | दिन गुजरते गए राकेश और ममता अब अपनी शादी की तयारी मे व्यस्त हो गए थे उनोने एक-दूसरे को कोई खत नहीं भेजे थे | देखते ही देखते जिस दिन का इंतजार राकेश कर रहा था वो दिन आज आया था आज दस तारीख थी आज सुबह की ट्रेन से ममता की दोस्त छाया भी आई थी अपने पती के साथ छाया आते ही ममता के कमरे मे चली गई और ममता उसे देखकर बहुत खुश हुई | आज ममता ने शादी वाला जोड़ा पहना हुआ था और बारात भी आ चुकी थी शादी वाले जोड़ों मे ममता बेहत खूबसूरत लग रही थी उसकी हातों मे मेहंदी का रंग बडा खुलकर उठा था | आज वाकई मे अगर ममता की माँ होती तो वह बहुत खुश होती ममता को शादी के जोडो मे देखकर,माँ ममता की नजर उतारती आज सुबह से ममता को उसकी माँ की बहुत याद आ रही थी लेकिन ममता ने किसी को नहीं कहा | उसे आज एक साथ खुशी और दर्द दोनों हो रहा था |खुशी इस बात की

थी की वो राकेश के पास जाने वाली थी जो उससे इतना प्यार करता और गम इस बात का था की उसके पास इस समय उसकी माँ नहीं थी | माँ तो एक एसी इंसान होती है जो इंसान को हर समय चाहिए चाहे बच्चा हो या कोई बुजुर्ग माँ की जरूरत हर किसी को होती है ना | राकेश ने ममता के गले मे मंगलसूत्र पहनाया अपने हातोंसे ममता की सिंदूर से मांग भरी और ममता हमेशा के लिए राकेश की हो गई थी | बिदाई के समय सुदिर और शीतल रो पड़े ममता भी रो रही थी | फिर राकेश ने ममता को समजाया फिर ममता राकेश के साथ राकेश के गाव चली गई | राकेश एक हफ्ते तक गाव मे ही रहा ममता और अपने पूरे परिवार के साथ फिर उसके बाद राकेश अकेल ही शहर लोट आया ममता अपना सब कुछ पीछे छोड़कर राकेश के लिए वह गई थी लेकिन अब वहा राकेश ने ममता को अकेला गाव छोड़ दिया थ| राकेश ममता को अपने साथ शहर लाना चाहता था पर वो कुछ नहीं कह सका क्युकी ममता उस घर की बड़ी बहु थी अब उसे ही घर संभालना था | राकेश के दो छोटे भाई भी थे अभी तक उनकी शादी नहीं हुई थी | राकेश और ममता एक दूसरे को खत लिखते थे लेकिन ममता को वह बिल्कुल अकेला महसूस होता था | ममता दिन भर घर का सब काम करती और रात को अकेली सोती उसे खालीपन महसूस होता था वो किसीसे जादा बाते भी नहीं करती थी | राकेश सिर्फ महीनों के आखरी शनिवार को एकबार गाव आता था जब राकेश आता तो ममता का चेहरा खुल जाता था | जैसे सुबह की रोशनी मे गुलाब के फूल की तरह ममता राकेश से बहुत सारी बाते करती उसके साथ कुछ गुनगुनाती हस्ती रहती और फिर राकेश जाने की बात करता तो माने ममता जैसी बुझी हुई फूलों की तरह हो जाती लेकिन कभी

ममता ने राकेश से कहा नहीं की मुझे भी तुमारे साथ शहर आना है उसे उसकी जीमेदारिया पता थी उसे मालूम था की अब माजी से कुछ घर का काम तो होता नहीं और फिर दो देवर भी तो है | राकेश और ममता खुश थे दोनों एक-दूसरे का सहारा बने अब शादी को साल दो साल हो गए थे | ममता अब उसके परिवार मे अछि तरह से घुलमिल गई थी | मानो वो इसे परिवार का सदस है और बहुत सालों से यह पर रहती है राकेश का अब प्रमोशन हो गया था उसे बहुत कम वक्त मिलता था लेकिन फिर भी वो ममता को मिलने अक्सर गाव चला जाता था | एक दिन ममताने राकेश को खत भेजा जिसे पढ़ते ही राकेश उसी दिन ममता से मिलने गाव चला आया | राकेश बहुत खुश था की वो पापा बनने वाला है वो जैसे ही घर आया उसने ममता को अपने गोद मे उठा लिया और नाचने लगा ठीक उसी समय ममता की सास रसोईघर मे आई और ये सब देख लिया और माजी ने राकेश को डाटा और कहा राकेश क्या कर रहे हो तुम पागल हो गए हो क्या ये रसोईघर है तूमार कमरा नहीं फिर राकेश ने ममता से इशारों मे पूछा की माँ को पता नहीं की तुम माँ बनाने वाली हो ममताने अपने आखों से इनकार किया और शर्मा के बाहर चली गई | फिर राकेश ने अपनी माँ से कहा अम्मा तुम गुस्सा क्यू करती हो अब तो तुम दादी बनने वाली हो यह सुनकर अम्मा बहुत खुश हुई और उनोने बाहर आकार ममता के सर को चुम्ब लिया | फिर रात मे ममता और राकेश अपने कमरे मे गए और उनोने ढेर सारी बाते की राकेश ने कहा हमे तो लड़की होगी और हम उसका नाम खुशी रखेंगे ममता ने कहा अगर लड़का हुआ तो राकेश ने कहा नहीं मुझे पता है हमे लड़की ही होगी ममताने कहा तुम यह मेरे पास कुछ दिन और नहीं रुख सकते राकेश

ने कहा अब यह से जा कोण रहा है मे तो इस हफ्ते यही पर रहूँगा मेरी पत्नी के साथ यह बात सुनकर ममता ने खुश होकर राकेश को गले लगा लिया | फिर राकेश ने ममता का सिर चुम्ब लिया अब ममता का मुह शर्म से गुलाबी हो गया उस रात की चादनी की किरणों मे ममता और भी खूबसूरत लग रही थी | राकेश ने धीमे से अपनी जेब से गजरा निकाला और ममता के बालों मे लगाया फिर अगली सुबह राकेश ममता से पहले जग गया था | वो ममता को बड़ी प्यार से देख रहा था सूरज की किरने खिड़की से होते हुई ममता की आखों पर आरही थी मानो सूरज ममता को नीद से जगाने की कोशिश कर रहा हो फिर राकेश ने खिड़की बंद करदी और ममता को अपने बाहों मे ले लिया अब ममता नीद से जग गई थी उसने राकेश से कहा क्या सुबह हो गई हटो मुझे जाने दो माजी मेरा इंतजार कर रही होगी यह बात कहकर ममता तयार होकर कमरे से बाहर चली गई और राकेश वही उस बिस्तर पर बैठ कर हस रहा था | अब घर के सबी लोग बड़े खुश थे वैसे अब राकेश के छोटे भाई विजय के लिए शादी के रिश्ते भी आने लगे थे| अम्मा ने राकेश से कहा हम अब विजय की शादी करवादे उसकी अब शादी की उम्र भी हो गई है और लड़की तो पहलेसे ही चुनी जा चुकी है अब ममता को भी थोड़ी सहायता होगी | राकेश ने कहा जैसे तुम ठीक समजों अम्मा फिर सब परिवार विजय को लेके उसके होने वाले ससुराल गए जो अम्मा का मायका भी था | इसका मतलब यही है की विजय अपने सगी मामाँ के लड़की से शादी करने चला था उसका नाम रमा था | रमा वही लड़की है जो राकेश से प्यार करती थी लेकिन वो कभी भी राकेश से बोल नहीं पाई और यह बात सिर्फ रमा को ही पता थी | फिर सब तय हुआ और एक दिन

विजय और रमा की शादी हो गई | इस घर मे अभी तक एकलोती ममता ही थी जो घर को सवार ती थी ममता सबकी देखबाल करती अब घर मे एक और लड़की आई वो थी रमा उसको जादा मूशकिल नहीं था इस घर मे अपनी जगह बनाना क्युकी रमा पहले से ही घर के सबी लोगों को अछि तरह से पहचान ती थी| उसे मालूम था की किसको क्या पसंद है और क्या नहीं इसलिए यह सब उसे आसान था रमा बचपन मे यह आया करती थी तभी से उसको राकेश अच्छा लगता था उसने अपने मन मे सोच लिया था की वो बड़ी होकर राकेश से ही शादी करेगी और इस घर की बड़ी बहु बनेगी लेकिन असल ज़िंदगी मे कुछ और ही है अब रमा विजय की पत्नी थी और घर की बड़ी बहु ममता थी | सब घर के लोग हर वक्त ममता को ही पूछते अब उन्हे ममता की बड़ी आदत हो गई थी लेकिन यह बात रमा को बिल्कुल भी अछि नहीं लग रही थी | रमा घर के सब लोगों से अछि तरह बर्ताव करती लेकिन वो ममता से ठीक तरह बात भी नहीं करती राकेश अब हर हफ्ते समय निकालकर गाव आया करता था और हमेशा ममता के लिए गजरा लेके आता यह देखकर रमा को ममता से और भी जलन होती रमा को लगता की ममता के जगह मे होनी चाहिए थी | रमा विजय के साथ खुश नहीं थी उन दोनों मे अक्सर झगड़े हुआ करते थे | रमा सबके सामने ममता से अच्छा बर्ताव करती लेकिन अकेले मे उसे नीचा दिखाती ममता को भी रमा की यह बात बिल्कुल अछि नहीं लगती उसने राकेश से कहा भी लेकिन राकेश ने कभी ममता के इस बात पर गोंर नहीं किया रमा अक्सर राकेश के नजदीक जाने की कोशिश करती लेकिन ममता की वजह से उसका मकसद कामयाब नहीं होता था | एक दिन राकेश और विजय शाम मे घर के

आगन मे बैठकर चाय पी रहे थे और अम्मा भी उनके साथ बैठी हुई थी | रसोईघर मे ममता और रमा कुछ काम कर रहे थे रमा ने धीमी आवाज मे कहा ममता दीदी अब कुछ महीने आप अपने भईया के घर जाइए अभी आपको आराम की भी जरूरत है राकेश जी की चिंता मत करिए मे उनका अछि तरह से खयाल रखूंगी बिल्कुल विजय जी की तरह रमा ने ठीक कहा लेकिन जिस अंदाज से कहा वह ममता पहचान गई रमा के मन मे क्या है यह बात अब ममता को अछि तरह से पता थी | ममता को रमा की यह बात सुनकर इतना गुस्सा आया की उसने जोर से कहा रमा इससे तुम्हें क्या तुम अपना देखो ममता की आवाज सुनकर राकेश और विजय रसोई घर मे दोड़कर आए रमा विजय के पास जाकर रोने लगी और बोली देखो न विजय जी आपकी भाभी मुझसे किस तरह बात कर रही है | विजय ने अपने भाई राकेश से आज पहली बार उची स्वर मे बात करते हुई कहा देखे लो भईया आपकी पत्नी इस तरह मेरी रमा का इन्सल्ट नहीं कर सकती राकेश को यह बात सुनकर इतना गुस्सा आया की वो अपने गुस्से को काबू मे नहीं रख सका उसने ममता को जोर से थपड़ लगाया ममता पहले सी ही बहुत नाजुक थी वो झटसे नीचे गिर पड़ी नीचे कुछ बर्तन रखे हुई थे ममता सीधे उस बर्तन पे गिर पड़ी और अब ममता के पेट मे दर्द होने लगा उसी समय घर के सबी लोग वह पर आकार यह सब देख रहे थे लेकिन किसीकी हिम्मत नहीं हुई बीचमे बोलने की क्युकी राकेश का गुस्सा घर के सबी लोगों को पता था सिवाय ममता के फिर अम्मा ने राकेश को कहा राकेश ये तुमने क्या किया क्या तुम्हें पता नहीं ममता बहु पेटसे है | जल्दी से इसे उठओ और अपने कमरे मे लेके चलो और राकेश के सबसे छोटे

भाई अजय ने गाव के वैद जी को घर पर लाया वैद आने तक तो ममता का चेहरा नीला पड़ चुका था | उसे इतना दर्द हो रहा था की जैसे पूरे बदन की हड्डीया एक साथ टूट जाए वैद जी ने ममता को देखकर राकेश से कहा इसे जल्दी से शहर के बड़े हस्पताल लेके जावो वरना तूमारा बच्चा तो तुमने खो दिया अब तुम इसे भी खोदोगे यह सुनकर राकेश के पाव के नीचे से मानो जमीन खिसक गई हो राकेश के तो हाथ-पाव ढीले पड़ गए थे अब गाव से शहर जाने के लिए दो घंटे का समय लग जाता राकेश ने बड़ी मुश्किल से ममता को शहर जानेकेलीये इंतजाम किया और राकेश अपने अम्मा को साथ लेकर ममता को शहर के हस्पताल मे ले गया वही पर ममता का भाई और भाभी को बुला लिया सारी रात राकेश ममता के लिए जागा उसे अपनी गलती का एहसास हो चुका था | अब अगली सुबह ममता को होश आया तो उसने देखा राकेश उसी के पास बैठे-बैठे सो गया था अब ममता ने अपना बच्चा भी खो चुका था और बच्चे के साथ अपना आत्मसमान भी जब राकेश ने देखा की ममता होश मे आ चुकी है तो उसने जल्दी से डॉक्टर साहब को बुलाया फिर थोड़ी देर बात ममता अपने भईया के साथ उनके घर चली गई | ममता ने अभी तक राकेश से कुछ बात भी नहीं की थी | राकेश ने बहुत प्रयास किया लेकिन ममता ने राकेश की और देखा तक नहीं ममता जैसे ही सुदिर के घर आई वो अपने कमरे मे चली गई और अपने आप को बंद कर लिया सुदिर और शीतल ने ममता को बहुत समजाया लेकिन ममता अपने कमरे से बाहर आई ही नहीं शीतल ने एक थाली मे खाना रखा और एक पानी की बोटाल ममता के दरवाजे के बाहर रख दी और ममता से कहा आप खाना तो खालों भले हमसे बात मत करो अगर आपकी माँ

होती तो आप उनसे भी एसही बर्ताव करती जैसे हम से कर रही हो शीतल की यह बात सुनकर ममताने अपने कमरे का दरवाजा खोला और शीतल को गले लगाकर रोने लगी फिर शीतल ने किसी तरह ममता को समजाके उसे खाना खाकर सुला दिया | ममता अब अंदर से बहुत टूट चुकी थी वो किसीसे बाते भी नहीं करती सिर्फ अपने कमरे मे अकेला रहना पसंद करती अपने माँ की साड़ी हमेशा अपने पास रकती अब ममता की आखे के नीचे बहुत काला पण आ चुका था उसके हड़ीय भी दिखाए दी रही थी अब ममता बहुत दुबली-पतली सी हो गई थी ममता की यह हालत सुदिर से तो देखा भी नहीं करती सुदिर के लाख पूछने के बाद भी ममताने उसे कुछ नहीं बताया ममता को यहा आकार करीब दो महीने हो गए थे लेकिन उसमे कुछ भी अच्छा बर्ताव नहीं हुआ वो अपने दर्द को भूला नहीं पाई राकेश ने बहुत बार ममता से बात करने की कोशिश की उसने ममता को खत भी भेजे लेकिन ममताने राकेश का किसी भी खत का कोई जवाब नहीं दिया जितना दर्द ममता को हो रहा था उससे कही गुना दर्द राकेश को भी था राकेश इस वजह से गाव भी नहीं गया था वह एक दिन बड़ी हिम्मत करके सुदिर के घर आया और ममता से मिलने के लिए सुदिर से पूछा क्या हम ममता से एक बार बात कर सकते है इसके बाद हम हमेशा के लिए आपसे बहुत दूर चले जाएंगे सुदिर को यह बात सुनकर बहुत बुरा लगा फिर उसने थोड़ी देर सोचा और राकेश से कहा तुम ममता से मिल सकते हो लेकिन इस बार तुमने ममता को रुलाया तो हम तुम्हें ममता से बहुत दूर कर देंगे फिर राकेश ममता के कमरे मे चला गया वह पर ममता अपने बिसतर के पास बैठकर खिड़की की रोशनी को देख रही थी राकेश धीरे से आया और ममता की पैरे के

पास बैठ गया ममताने राकेश की और देखा भी नहीं | लेकिन राकेश ममता के देखने का इंतजार कर रहा था दोनों कुछ वक्त के लिए शांत थे राकेश अभी भी ममता की और देख रहा था उसे लग रहा था की उसने जिस लड़की से शादी की है वो यह लड़की हे ही नहीं कोई और है उलजी हुई खामोश और बहुत ही दुबली सी उसका चेहरा पीला पड़ चुका था उसकी हसी कही खो गई है फिर राकेश ने धीरे से अपना हाथ आगे बढ़ाकर ममता की पैर पर रखा राकेश की आखों मे नमी थी उसके आसू का एक बूँद ममता की हथेली पर आकार गिरा जैसे ही राकेश के आसू का बूँद ममता को टच हुआ ममताने राकेश की और देखा फिर दोनों ने एक-दूसरे को गले लगा लिया फिर काफी समय कमरे मे बहुत शांतता थी दोनों एक-दूसरे मे खो गए राकेश ने ममता से माफी भी मांगी और ममताने बड़ा दिल करके राकेश को क्षमा कर दिया | आदमी कितना भी बड़ा क्यू न हो लेकिन वो अपने पसंदीदा औरत के लिए अपना ईगो भी साइड मे रखकर उससे प्यार करता है और फिर ममता तो राकेश का पहला प्यार था | राकेश ममता को अपने साथ गाव लेके गया वही पर जहा ममताने अपना आत्मसमान और अपनी प्यार की पहली निशानी भी खोई थी | लेकिन ममता ने राकेश से नहीं कहा की वो गाव नहीं तुमरे साथ इसी शहर मे रहेगी हालाकी ममता यह कह सकती थी | ममता को देखकर घर मे सब खुश हुए सिवाय रमा के रमा ने ममता से बात भी नहीं की | अब राकेश और ममता के बीच मे धीरे-धीरे सब अच्छा होने लगा था ममता की सहली छाया का खत भी ममता को आता था और ममता भी छाया को खत लिखती थी ममता बड़ी प्यार से सबसे बाते करती अब ममता की इस गाव मे भी अछि पहचान हो गई थी ममता अब धीरे-धीरे

अछि होने लगी उसकी खोई हुई हसी अब वापस आने लगि राकेश यह सब देखर अच्छा महसूस करने लगा फिर राकेश फिर से शहर चला गया और हफ्ते मे एक बार गाव आया करता था | रमा अब पेटसे थी इसलिए सभी रमा का बहुत ख्याल रखते थे राकेश भी रमा के लिए शहर से अच्छे तोफ़े लाता लेकिन ममताने यह सब देखकर भी अनदेखा किया वो कभी कुछ नहीं कहती सब चुप-चाप सह लेती अब फिर से राकेश का बर्ताव बदल गया था वो हर वक्त ममता को सबके सामने डाट देता उसे घर के बाहर जाने के लिए मना भी करता ममता ने सब सहलिया उसने किसी से कुछ कहा ही नहीं इसलिए अब घर के सभी लोग ममता को कुछ नहीं समजते जो मुह मे आए उसे कह देते हर वक्त उसकी आत्मसमान को ठेच पोहचाते ममता कर भी क्या सकती थी वो जिसके सहारे यहा आई थी अब वही उसका नहीं था | वो तो अपने मायके मे भी नहीं जा सकती मायका तो वो होता है न जहा पर अपनी माँ होती है और ममता की माँ उसे पहले ही छिन चुकी थी अब ममता के पास राकेश के सिवा अपना कोई नहीं था यह बात राकेश को अछि तरह से पता थी तभी तो वो इतना कुछ होने के बाद भी ममता से इस तरह से बर्ताव करता हर औरत शादी के बात बिल्कुल इसी तरह अपना वजूद खो देती है | औरत कर भी क्या सकती है इस जालिम समाज के डर से अगर मायके मे रही तो समाज क्या कहेगा और अलग रही तो दुनिया वालों की बुरी नजर से उसे कोण बचाएगा यही बात सोचकर ममता चुप थी ममताने ये सब बाते अभी उससे सुनाई नहीं जाती वो यह से बहुत दूर जाना चाहती थी जहा पर वो सुकून और शांति से रहे लेकिन शायद ममता के किस्मत मे यह नहीं था देखते ही देखते अब बहुत दिन बित चुके थे रमा को लड़की हुई

थी और राकेश ने रमा के लड़की की नाम खुशी रखा यह बात ममता को इतनी बुरी लगि की उसने पहरी बार राकेश की आखों मे देखकर बिना डरे उसे कहा अगर मे आपके जिंदगी मे तकलीफ हु तो क्यूना आप उस तकलीफ से हमेशा के लिए आजाद हो जाये और अपनी घर वालों के साथ खुश रहे राकेश ने ममता से कुछ नहीं कहा फिर रात करीब एक बजे सब सोने के बाद ममता उठी उसने अपना सामान भरा और एक खत लिखा की मे आपको इस दर्द से हमेशा के लिए आजाद करती हु आपकी ममता उस खत के साथ ममताने अपना मंगलसूत्र भी रखा था | अब जब सुबह राकेश निद से जगा उसने ममता का खत पढ़ा वो मंगलसूत्र देखा जो उसने अपने हातों से ममता के गले मे डाला था | राकेश ने ममता को बहुत खोजा लेकिन ममता कही मिली ही नहीं राकेश ने सुदिर के घर पर भी ममता को खोजा लेकिन ममता नहीं मिली अब राकेश बेचेन था काफी दिन बित गए लेकिन ममता के बारे मे कुछ पता नहीं चला कुछ महीनों बाद घर के सारे लोग ममता को भूल गए लेकिन राकेश ममता को भूल नही पाया रमा जैसा चाहती थी बिल्कुल वैसा ही हुआ अब घर का सारा कारोबार रमा के हाथ मे आगया था अम्मा का स्वर्गवास हो गया था साल गुजर रहे थे वक्त थोडीना किसी के लिए रुकता है वो तो हमेशा चलता राहत है | अब इस बात को दस साल गुजर गए थे राकेश अब हमेशा के लिए गाव मे आकार बस गया राकेश के दोनों भाईयोंकि शादी हो चुकी थी सब अपनी-अपनी जिंदगी मे व्यस्त थे अब राकेश के बाल सफेद होने लगे राकेश अकेलापण महसूस करने लगा वो हर वक्त ममता के यादों मे खोया हुआ रहता | ममता के पुराने खत पढ़ता राकेश को अपनी गलती का एहसास हो गया था लेकिन अब भी राकेश ने

ममता की आने की उमीद नहीं छोड़ी थी एक दिन राकेश उसी शहर अपने पुराने दोस्त के वहा गया फिर आते समय राकेश उसी बाग मे गया जहा पर उसने पहली बार ममता को देखा था | अब बाग पहले से बदल चुकी थी राकेश फिर उसी जगह जा कर बैठा जहा पर ममता बैठती थी |राकेश करीब दो घंटे तक वह अकेला बेठा रहा शायद वो ममता का इंतजार कर रहा हो फिर राकेश थोड़ी देर बात बाग से बाहर जाने लगा तो उसके बटवारे से एक झुमका गिरा वो झुमका वही पे राकेश को पहली बार मिला था राकेश को पीछेसे आवाज आई सुनिए आप का झुमका गिरा राकेश ने मुड़कर देखा और झुमका अपनी जेब मे रखा और उस औरत का शुक्रिया किया लेकिन राकेश ने उस औरत को पहचान नहीं लेकिन उस औरत ने राकेश को पहचान लिया था वो और कोई नहीं ममता की दोस्त छाया थी फिर छाया ने कहा क्यू राकेश जीजाजी क्या आपने हमे पहचान नहीं मे आपकी ममता की दोस्त छाया हु कहा है मेरे सहली क्या मुझे भूल गई मेरे खत का जवाब भी नहीं देती है और मे परसों सुदिर भईया के घर गई थी वह पर तो ताल लगा है क्या हुआ बताओ ना जीजाजी फिर राकेश ने छाया को सब बता दिया छाया को यह सुनकर बहुत दुख हुआ फिर राकेश ने पूछा क्या लगता है आपको मेरी ममता कहा होगी छाया को पहले राकेश पर बहुत गुस्सा आया उसने राकेश को बहुत सुनाया फिर उसको राकेश का तरस आया और उसने कहा ममता अपने पुराने गाव अपने घर गई होगी छाया की यह बात सुनकर राकेश बहुत खुश हुआ फिर वो पहले अपने गाव गया अपना और ममता का समान पैक किया उसके बाद उसने घर वालोंसे कहा मे हमेशा के लिए इस घर से जा रहा हु यह कहकर राकेश चल पड़ा उसने एक बार भी पीछे मुड़कर

नहीं देखा था फिर राकेश सीधे ममता के पुराने गाव गया उसने काफी कोशिश की ममता को धुड़नेकी फिर आखिर कर उसे ममता का घर मिल ही गया जैसे ही वो घर के अंदर गया ममता वही पर थी उसने ममता से माफी मांगी दोनों बहुत रोए फिर राकेश ने अपनी जेब से गजरा निकालकर ममता की बालों मे सजाया हालाकी दोनों की उम्र अब हो गई थी लेकिन कहते है न प्यार की कोई उम्र नहीं होती राकेश इस बार ममता को लेने नहीं बल्कि उसके साथ उसकी दुनिया मे रहने वाला था| इस बार राकेश ने ममता को की नया वादा नहीं किया बल्कि उससे वादा लिया की अब हम दोनों हमेशा साथ रहेंगे | जब हमारे पास कोई चीज या फिर कोई इंसान होता है तो हमे उसकी कदर नहीं होती हमे उसे कभी जताते नहीं की वो हमारे लिए कितना खास है लेकिन जैसे ही वो हमसे दूर हो जाता है तो हमे उसका एहसास होता है काश हमने उसे अछि तरह से संभाल होता तो यह तड़प हमारे नसीब मे नहीं इसलिए कभी-कभी हमे प्यार जताना चाहिए|अब दोनों का प्यार फिर से खिल उठा थोड़ी देर बाद राकेश ने अपनी बैग से ममता की गुड्डीया निकाली जो ममता राकेश के घर मे छोड़कर आई थी उसी गुड़िया की वजह से राकेश कभी ममता को भूल नही पाया जब भी उसे ममता की याद आती तो राकेश इस गुड़िया से बाते करता था खैर राकेश ने यह गुड़िया ममता को दी और कहा अब इसका नाम मेने खुशी रखा है राकेश की यह बात सुनकर ममता रोने लगी और राकेश के बाहों मे सो गई | फिर राकेश ने ममता को वही मंगलसूत्र पहनाया जो ममता राकेश के पास छोड़कर आई थी | जहा पर ममता ने अपना बचपन सारा गुजारा था अब वही राकेश और ममता रहने लगे शाम को दोनों उसी नदी के पास जाते जहा ममता अक्सर

जाया करती थी अब दोनों एकसाथ खुशी-खुशी अपनी बची हुई जिंदगी गुजार रहे थे | किसी ने सच ही कहा है ज़िंदगी वाकई मे समंदर की तरह होती है समंदर की लहर समंदर के पानी को थोड़ी देर के लिए दूर लिए जाती है और फिर से समंदर मे आकार बस जाती है बिल्कुल ममता के ज़िंदगी की तरह ठीक इसे तरह ममता के ज़िंदगी मे एक एसी बड़ी लहर आई की उसे अपने गाव से अपने घर से बहुत दूर कर दीया था लेकिन आखिरकार ममता की ज़िंदगी वही आकार ठहर गई जहा से वो शुरू हुई थी वो भी दुगनी खुशी के साथ अपने प्यार के साथ...!

यह थी ममता और राकेश की कहानी |